



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत-अफ्रीका संबंधों का एक दशक:
जुड़ाव, निर्माण और पुनर्जीवन

भारत-अफ्रीका संबंधों का एक दशक: जुड़ाव, निर्माण और पुनर्जीवन

संदर्भ

- भारत की अफ्रीका के साथ सहभागिता को रणनीतिक साझेदारियों के माध्यम से गहराना आवश्यक है, जो संपर्क, क्षमता-निर्माण और राजनयिक संबंधों के पुनर्जीवन पर बल देती हैं।

भारत-अफ्रीका संबंधों के बारे में

- ऐतिहासिक नींव और राजनयिक विरासत:** भारत की अफ्रीका के साथ सहभागिता साझा औपनिवेशिक-विरोधी संघर्षों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे मंचों के माध्यम से एकजुटता पर आधारित है।
 - दशकों से भारत ने वैश्विक मंचों पर अफ्रीकी देशों का समर्थन किया है, रंगभेद का विरोध किया है और क्षमता-निर्माण तथा शिक्षा के माध्यम से विकास सहायता प्रदान की है।
 - भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन (IAFS-III), 2015 ने द्विपक्षीय सहभागिता को संस्थागत रूप दिया, जिसमें सभी 54 अफ्रीकी देशों ने भाग लिया।

रणनीतिक बदलाव: विस्तार का एक दशक

- राजनयिक पहुँच:** भारत ने 2015 से अफ्रीका में 17 नए मिशन खोले हैं।
 - भारत के समर्थन ने अफ्रीकी संघ की G20 में पूर्ण सदस्यता सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई और भारत वैश्विक शासन में, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र में, अफ्रीका के प्रतिनिधित्व का समर्थन करता रहा है।
- व्यापार और निवेश:** भारत-अफ्रीका व्यापार \$100 बिलियन को पार कर चुका है।
 - प्रमुख क्षेत्र हैं—महत्वपूर्ण खनिज, कृषि, प्रौद्योगिकी और विनिर्माण।
 - भारतीय निवेश लगभग \$75 बिलियन तक पहुँच चुका है, जिससे भारत अफ्रीका के शीर्ष पाँच निवेशकों में शामिल है।
 - यह लेन-देन आधारित मॉडल से सहयोगात्मक मॉडल में परिवर्तित हुआ है—जिसका ध्यान अवसंरचना, डिजिटल उपकरणों और स्वास्थ्य प्रणालियों के सह-निर्माण पर है।
- विकास वित्त:** भारत के एक्जिम बैंक की \$40 मिलियन की क्रेडिट लाइन EBID को अफ्रीकी-नेतृत्व वाले विकास के समर्थन का संकेत देती है।
- सुरक्षा सहयोग:** अफ्रीका-भारत प्रमुख समुद्री सहभागिता (AIKEYME), 2025, जिसमें नौ अफ्रीकी नौसेनाएँ शामिल थीं, साझा हिंद महासागर भूगोल पर आधारित समुद्री सुरक्षा सहयोग के नए चरण को दर्शाती है।
 - रक्षा सहयोग बढ़ रहा है, भारत रक्षा अंताशे तैनात कर रहा है और मौरीशस नौसैनिक अड्डे जैसी रणनीतिक स्थापनाओं का उद्घाटन कर रहा है।
- शिक्षा और नवाचार:** ज्ञांजीबार में नया IIT मद्रास परिसर भारत की दीर्घकालिक शैक्षणिक सहयोग की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
 - ITEC, ICCR और पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क जैसे कार्यक्रम हजारों अफ्रीकी पेशेवरों को प्रशिक्षित करते रहे हैं।
- जन-से-जन आदान-प्रदान:** भारत का सबसे बेहतर निर्यात प्रतिभा आदान-प्रदान है।
 - विगत दशक में 40,000 से अधिक अफ्रीकी छात्रों ने भारत में अध्ययन किया।

- कई अब अफ्रीका में नेतृत्व भूमिकाओं में कार्यरत हैं।
- अफ्रीकी छात्र, खिलाड़ी और उद्यमी भारत में तीव्रता से दिखाई दे रहे हैं।
- ये सांस्कृतिक संबंध विश्वास पर आधारित एक जीवंत साझेदारी का निर्माण करते हैं।

मुख्य चिंताएँ और चुनौतियाँ

- **रणनीतिक चुनौतियाँ:** चीन की उपस्थिति को ‘साम्राज्य-निर्माण’ के रूप में देखा जाता है, जिसमें भारी निवेश, सैन्य अड्डे और व्यापार समझौते शामिल हैं, जो अफ्रीका की भू-राजनीतिक दिशा को बदल रहे हैं तथा भारत की सापेक्षिक पकड़ को कम कर रहे हैं।
 - भारत का सहयोग मॉडल—जो क्षमता-निर्माण और पारस्परिक सम्मान पर केंद्रित है—चीन की अवसंरचना-प्रधान, उच्च-दृश्यता परियोजनाओं से प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई का सामना करता है।
- **राजनयिक और संस्थागत अंतराल:** भारत ने विगत दशक में कोई अनुवर्ती शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं किया है, जबकि 2015 में IAFS-III आयोजित किया गया था।
 - इससे राजनयिक सहभागिता में गति को हानि हुई है।
 - पिछले शिखर सम्मेलनों में किए गए वादों को ट्रैक और मूल्यांकन करने के लिए संस्थागत तंत्र की कमी है, जिससे जवाबदेही एवं रणनीतिक योजना प्रभावित होती है।
- **संचालन और आर्थिक बाधाएँ:** भारत का अफ्रीका के साथ व्यापार, बढ़ते हुए भी, चीन से पीछे है और निवेश प्रवाह क्षेत्रों और क्षेत्रों में असमान है।
 - अफ्रीका में भारतीय पहलों की सीमित दृश्यता और ब्रांडिंग उनके प्रभाव को कम करती है, विशेषकर चीन की उच्च-प्रोफ़ाइल परियोजनाओं जैसे रेलवे, बंदरगाह एवं औद्योगिक पार्कों की तुलना में।

भारत-अफ्रीका संबंधों के अवसर

- **उभरता विकास गलियारा:** अफ्रीका की जनसंख्या वृद्धि और भारत की आर्थिक प्रगति तकनीक, विनिर्माण एवं सेवाओं में सहयोग के लिए एक प्राकृतिक गलियारा बनाते हैं।
- **साझेदारी मॉडल का विकास:** भारतीय कंपनियाँ प्रतिस्पर्धी बनी हुई हैं लेकिन प्रायः छोटे बैलेंस शीट और नौकरशाही विलंब से बाधित होती हैं।
 - चीन अफ्रीकी बाजारों पर हावी रहता है, जिससे भारत को नवाचार करने और मूल्य श्रृंखला में ऊपर जाने की आवश्यकता है।
- **भविष्य के क्षेत्र:** भारत को ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और डिजिटल अवसंरचना में निवेश करने की आवश्यकता है।
 - अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (AfCFTA) भारत से तीव्रता से एकीकृत हो रहे बाजार के साथ सामंजस्य की मांग करता है।

आगे की राह: रोडमैप 2030 और साझा समृद्धि

- प्रस्तावित ‘रोडमैप 2030’ भारत-अफ्रीका संबंधों को गहरा करने के लिए लगभग 60 नीति सिफारिशों प्रस्तुत करता है।

- भारत-अफ्रीका के AfCFTA कार्यान्वयन का समर्थन करना चाहता है, जिससे अफ्रीका-अंतर व्यापार एवं संपर्क बढ़ सके।
- वित्त को परिणामों से जोड़ना: क्रेडिट लाइनें दृश्यमान, उच्च-प्रभाव वाली परियोजनाओं की ओर ले जानी चाहिए।
 - सार्वजनिक धन को निजी निवेश को जोखिम-मुक्त करना चाहिए, न कि उसे प्रतिस्थापित करना।
- भारत-अफ्रीका डिजिटल गलियारा बनाना: स्वास्थ्य, शिक्षा, फिनटेक और सार्वजनिक सेवाओं के लिए प्लेटफॉर्म सह-विकसित करना, भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना को अफ्रीका के तीव्रता से बढ़ते नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के साथ जोड़ना।
- संस्थागत संरचना का पुनर्जीवन: भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन का समय पर पुनर्जीवन आवश्यक है।
 - 2015 का शिखर सम्मेलन प्रमुख राजनयिक गति को अनलॉक कर चुका था, और इसे बहाल करना सतत उच्च-स्तरीय सहभागिता के लिए आवश्यक है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत-अफ्रीका संबंधों के विकास का विश्लेषण कीजिए। भारत के दृष्टिकोण ने अफ्रीका के साथ उसके सामरिक, आर्थिक और कूटनीतिक जुड़ाव को किस प्रकार आकार दिया है?

